छोटे स्वाध्याय मण्डलों की बड़ी तथा महती भूमिका.

श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

EMD, SHANTIKUNJ
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

छोटे स्वाध्याय मंडलों की बड़ी तथा महती भूमिका

भव्य इमारत वाले प्रज्ञा पीठों की ही तरह बिना इमारत वाले स्वाध्याय मंडल, प्रज्ञा संस्थान भी समान भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। साधना अधिक और संगठन कम होने पर सामाण्यतः कार्य क्षेत्र बढ़ जाता है और उपक्रम का अनुपात भी अधिक रहता है। इतने पर भी उद्देश्य और उत्तरदायित्व की दृष्टि से दोनों के मध्य राई रत्ती का अन्तर नहीं है। कम साधना और संगठन छोटा होने पर सामान्यतः कार्यक्षेत्र भी छोटा रहेगा किन्तु अर्थ महत्व या उत्तरदायित्व कम होता नहीं है।

स्वाध्याय मण्डल नये आशा केन्द्रों के रूप में उभरे हैं। जहाँ जीवन है वहाँ आशा भी रहेगी। लगता है अगले दिनों यह नवनिर्मित स्वाध्याय मंडल ही युगान्तरीय चेतना के अग्रदूत बनेंगे और लघुकाय दीपकों से गौरवान्वित होने वाली दीपावली को अपने सफल प्रयत्नों से सम्पन्न करेंगे। प्रज्ञा पीठ तो २४०० पर ही रुक गये। पर स्वाध्याय मंडल प्रज्ञा संस्थानों की संख्या २४ हजार तक जा पहुँचने में अब किसी प्रकार का संदेह रह नहीं गया है। दो तिहाई मंजिल पूरी हो जाने पर एक तिहाई की पूर्ति पर भी जल्दी विश्वास होता है।

सर्वसुलभ होने से इस स्थापना के व्यापक होने की पूरी गुंजायश है। असंख्य लोगों के थोड़े-थोड़े सहयोग से ही युग परिवर्तन जैसे प्रवाह पनपते और सफल होते हैं। सही आधार बन जाने पर अति कठिन दीखने वाली मंजिलें भी सहज हो जाती हैं। इस प्रकार से इस अभियान को महत्वपूर्ण भी कहा जा सकता है। इन संस्थानों का नामकरण उनकी प्रधान प्रक्रिया स्वाध्याय को ध्यान में रखते हुए किया गया है। वस्तुतः वे स्वाध्याय तक सीमित नहीं हैं। आयुर्वेद में द्राक्षासव, अमृतारिष्ट, लवंगादि वटी, सितोपलादि चूर्ण आदि नाम उन औषधियों में पड़ने वाले द्रव्यों की महत्ता का सम-

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रण दिलाने के लिए दिये गये है। इसका अर्थ यह नहीं कि उनमें मात्र वह एक ही वस्तु है। स्वाध्याय मण्डलों के संबंध में भी यही बात है। उनके साथ वे सभी कार्यक्रम जुड़े हुए हैं जो बड़े प्रज्ञा पीठों को सौंपे गये हैं। हर किसी को स्मरण रखना चाहिए कि स्वाध्याय मण्डलों के नाम के साथ प्रज्ञा संस्थान भी जोड़ दिया गया है। यह इस बात का चिन्ह है कि इन बिना इमारत वाले संस्थानों को ही परिस्थितियों के अनुरूप वे सभी उत्तरदायित्व निभाने होंगे जो न केवल प्रज्ञा पीठों के लिए वरन् वरिष्ठ प्रज्ञा पुत्रों के लिए आवश्यक ठहराये गये हैं।

वेद सर्वप्रथम ग्रन्थों के रूप में प्रकट हुए। उन्हें ऋषियों द्वारा हृदयंगम किया गया। इसके उपरान्त ही उन्हें पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने का प्रचार क्रम आगे बढ़ा। युगान्तरीय चेतना का अवतरण भी सर्वप्रथम प्रज्ञा साहित्य के रूप में ही होता है। इसके उपरान्त ही वे प्रज्ञा पुत्रों को प्रेरणा प्रदान करते हैं। जन-जन को आन्दोलित करने की प्रक्रिया इसके उपरान्त ही चलती है। अस्तु आवश्यक हो जाता है कि महान परिवर्तन के कृत्य को समझने-समझाने के लिए प्रज्ञा साहित्य के स्वाध्याय को प्रमुखता एव प्राथमिकता दी जाय। इसके बिना गाड़ी एक कदम बढ़ती ही नहीं।

इस प्रयोजन के लिए अब तक का प्रकाशित साहित्य ही अनुपम है। पर अब इस साल तो सूत्र सचालक ने हर दिन एक फोल्डर पुस्तिका लिखने के उपरान्त ही पानी पीने का व्रत लिया है। यह प्रस्तुतीकरण और भी अधिक सशक्त प्राणवान एव सामयिक है। इसे अगले दिनों अन्यान्य भाषाओं में भी प्रकाशित करने की योजना बन रही है। पर प्रकाशन से भी बड़ी बात यह है कि जो उपलब्ध है उसे जन-जन को पढ़ाया सुनाया जाय। जो खरीद नहीं सकते या अरुचि के कारण खरीदना नहीं चाहते, उन्हें घर बैठे, नित्य नियमित रूप में, बिना मूल्य पढ़ाने और वापिस लेते रहने का उपाय ही कारगर हो सकता है। बिना पढ़ों का उसे सुनते रहने में काम चल सकता है। स्वाध्याय मण्डलों का यही प्रारम्भिक कार्य है। इसके लिए झोला पुस्तकालय, चल पुस्तकालय, ज्ञान रथ चलाये जाने की प्रक्रिया पर अत्यधिक जोर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिया जाने लगा है। इस हलचन के चलने, न चलने, चलाने, न चलाये को प्रज्ञा संस्थानों एवं प्रज्ञा पुत्रों के जीवित-मृतक होने का प्रमाण माना जा रहा है।

मांगे के या किराये के एक छोटे कमरे को भी स्वाध्याय मंडल, प्रज्ञा-संस्थान का कार्यालय माना जा सकता है। वह संचालक मण्डल के किसी सदस्य के घर एक अल्मारी में भी प्रतिष्ठित रह सकता है। मुख्य बात है गतिविधियोंके संचालन की। निर्धारित गतिविधियों को तीन भागोंमें विभक्त किया जा सकता है। (१) स्वाध्याय (२) सत्संग (३) सृजन। लेखन और वाणी के साथ-साथ करने-कराने का उपक्रम जुड़े तभी उनका गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ता है। अस्तु तीनों को अन्न जल, वायु की तरह आकाश पाताल और धरातल की तरह, स्थूल सूक्ष्म और कारण की तरह अविछिन्न एवं पूरक माना गया है। सभी प्रज्ञा संस्थानों को इन्हें अपनाकर अपनी प्राण प्रखरता का परिचय देना चाहिए।

स्वाध्याय प्रक्रिया—झोला पुस्तकालयों ज्ञानरथों के माध्यम से व्यापक बनाई जाती है। अपने पहुँच के विज्ञ जनों की सूची बनाकर उन तक प्रज्ञा साहित्यपहुँचाने वापिस लाने की योजना को व्यापक बनाने का प्रयत्न किया जाता है। व्यक्तिगत सम्पर्क,परामर्श, अनुरोध, प्रोत्साहन का खाद-पानी मिलने पर यह स्वाध्याय समयानुसार अपने चमत्कारी परिणाम का प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध करता है।

स्वाध्याय प्रक्रिया का ही एक पक्ष दीवारों पर आदर्श-वाक्य लिखकर उन्हें बोलती हुई बनाया जाना है। रास्ता चलते लोगों की दृष्टि उन पर बार-बार पड़ती है तो अचेतन ढलने की एक विशिष्ट मनो वैज्ञानिक प्रक्रिया कार्य करने लगती है। घरों में आदर्श वाक्य लगाने का भी समूचे परिवार पर आगन्तुक, अतिथियों पर असाधारण प्रभाव पड़ता है और उनका सम्मान उन प्रेरणाओं के ढाँचे में अनायास ही ढलने लगता है। प्रज्ञा परिजन दीवारों पर वाक्य लिखने लिखाने की योजना बनाते हैं। जहाँ भी प्रभाव काम देता है आदर्श वाक्यों के पोस्टर लगवाने के लिए प्रयत्नरत रहते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्संग प्रक्रिया में हर किसी के लिए अपनी ओर से अपने विचार व्यक्त करना तो कठिन है। पर स्लाइड प्रोजेक्टर, टेपरिकार्डर आदि उपकरणों का सहारा लेकर किसी भी गली-मुहल्ले के लोगों को एकत्रित किया जा सकता है । प्रकाश चित्रों की व्याख्या करते हुए—टेपों में भरे सत्संग एवं प्रवचन सुनाते हुए सहज एवं आकर्षक सत्संग का सुयोग भली प्रकार बिठाया जा सकता है । इसके अतिरिक्त प्रज्ञा पुराण की कथा को कम समय अथवा अधिक समय तक चलने वाली व्याख्या बनाकर लोक मानस के परिष्कार का क्रम चलता रह सकता है । घरों में प्रज्ञा पुराण की नियमित कथा-कहानियों के माध्यम से परिवार निर्माण का प्रयोजन सहज ही पूरा होता रह सकता है ।

सत्संग के अन्तर्गत ही जन्म दिवसोत्सव जैसे आयोजन आते हैं। यह हैं तो व्यक्ति निर्माण की प्रक्रिया पर । उपस्थित लोगों को इस अवसर पर परिवार निर्माण तथा समाज निर्माण के सम्बन्ध में भी बहुत कुछ समझाया जा सकता है । घरों में षोडश संस्कार, मुहल्ले, गाँवों में पर्व त्यौहारों के सामूहिक आयोजन इसी सत्संग प्रयोजन की आवश्यकता पूर्ण करते हैं। आश्विन और चैत्र में नवरात्रियों में तो नौ दिन की सामूहिक साधनायें चलती हैं और साथ में रात्रि का ज्ञान यज्ञ भी जुड़ा रहता है तो उससे स्थानीय स्तर पर प्रायः वैसा ही उपक्रम बन पड़ता है जैसा कि शान्ति-कुञ्ज में चलने वाले कल्प साधना सत्रों का होता है। वर्ष में दो बार यह आयोजन उत्साह भरे वातावरण में सम्पन्न किये जाते रहें तो उससे सजीवता सक्रियता निश्चित रूप से उभरी रहेगी ।

स्वाध्याय मंडल, प्रज्ञा संस्थानों के लिए तीसरा कार्यक्रम सृजन वर्ग का है । उसके अन्तर्गत रचनात्मक प्रयासों का समावेश है । स्वाध्याय और सत्संग के साथ-साथ इस तीसरे निर्माण को भी सभी प्रज्ञा परिवार, प्रज्ञा परिजन मिल जुलकर सम्पन्न करें ।

इस संदर्भ में तात्कालिक उत्तरदायित्व प्रज्ञा पुरश्चरण को प्रखर एवं व्यापक बनाने का है । वायुमंडल के संशोधन में तुलसी आरोपण एक कारगर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

शुभारम्भ है। उससे संव्याप्त प्रदूषणों से बचा एवं बचाया जा सकता है। हरितमा संवर्धन की प्रखरता तो उसके साथ प्रत्यक्ष ही जुड़ी हुई है। वृक्षारोपण, पुष्पोद्यान, घरेलू शाक वाटिका जैसे कितने ही वायु शोधक एवं आरोग्य वर्धक प्रयोगों को इससे बल मिलता है। घर में वनस्पति भगवान के देवालय की भूमिका तुलसी का थांवला निभाता है। साथ ही उस माध्यम से समूचे परिवार में सरल पूजा क्रम चल पड़ने से आस्तिकता का वातावरण बनता है। अगरबत्ती, दीपक, अर्घ्यजल, खड़े,खड़े जप, ध्यान, परिक्रमा, नमन, वन्दन जैसे सरल उपचारों से हर घर को देव मंदिर बनने का अवसर मिलने से वहाँ आस्तिकता जड़ जमाये रहेगी और उसके दूरगामी परिणाम होंगे।

वायुमंडल की विषाक्तता जिस प्रकार शहरों को, वनस्पतियों को, पदार्थों को नुकसान पहुँचाती है उसी चेतनात्मक अदृश्य वातावरण में भ्रष्टता दुष्टता का प्रवाह भर जाने से सामान्य जनों के चिन्तन चरित्र और व्यवहार में निकृष्टताओं का विष घुलता है। फलतः लोक मानस में दुष्प्रवृत्तियाँ बन पड़ने से विग्रह खड़े करने और परिस्थितियों में ऐसी प्रतिकूलता भरती है जिनसे अगणित समस्यायें, विपत्तियाँ, विभीषिकायें उपजतीं तथा सर्वनाश का संकट खड़ा करतीहैं। इसके निराकरणमें मात्र भौतिक, साम,दाम,दण्ड भेद से ही काम नहीं चलता अध्यात्म उपचार भी अपनाने होते हैं। इसके लिए इन दिनों प्रज्ञा पुरश्चरण का धर्मानुष्ठान नियोजित किया गया है। उसे हर दृष्टि से सफल और व्यापक बनाने की जिम्मेदारी भी स्वाध्याय मण्डलों को ही सौंपी गई है।

प्रज्ञा पुरश्चरण का स्वरूप सर्व सुलभ है। प्रातःकाल सूर्योदय के समय जो जहाँ जिस भी स्थिति में हो काम छोड़कर पाँच मिनट मौन मानसिक गायत्री जप, हाथ जोड़कर करें। आँखें बन्द करके प्रातःकालीन सूर्योदय (सविता) का ध्यान करता रहे। पाँच मिनट करने पर उस उपक्रम का पुण्य अनन्त अन्तरिक्ष में बिखर जाने की भावना करे। प्रज्ञा पुरश्चरण का दैनिक कृत्य इतना भी है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुरश्चरण प्रक्रिया में जप या हवन भी करना होता है। महीने में एक दिन सभी भागीदार एकत्रित हों। पन्द्रह मिनट प्रज्ञा यज्ञ, पन्द्रह मिनट संगीत, एक घण्टा प्रवचन का क्रम रखें। इस प्रकार डेढ़ घण्टे में ही यह मासिक प्रज्ञा यज्ञ सम्पन्न हो जाता है। अग्निहोत्र की सरलतम विधि पाँच घृत दीप—पाँच-पाँच अगरबत्तियों के पाँच गुच्छक—चौबीस बार सामूहिक गायत्री मन्त्रोच्चार तक संक्षिप्त कर दी गई है। इसे कहीं भी बिना किसी झंझट और व्यय के आसानी के साथ सम्पन्न किया जा सकता है।

स्वाध्याय मंडल अपने प्रभाव क्षेत्र में प्रज्ञा पुरश्चरण के अधिकाधिक भागीदार बनायेंगे और इस बात का लेखा-जोखा रखेंगे कि उनके क्षेत्र में निर्धारित विधि व्यवस्था ठीक ठीक क्रम से सम्पन्न हो रही है। इसकी सूचना शान्तिकुञ्ज भेजते रहेंगे।

इसके अतिरिक्त शिक्षा और स्वास्थ्य सुधार के लिए सभी प्रज्ञा संस्थानों के स्कूली छात्रों को बिना फीस की ट्यूशन पढ़ाने वाली बाल संस्कार पाठशालायें स्थापित करनी चाहिए। इन छात्रों को खेल-कूद, व्यायाम-आसन, प्राणायाम, ड्रिल, फर्स्ट-एड-परिचर्या आदि के प्रशिक्षण में भी संलग्न रखना चाहिए। छोटे रूप में इतना रचनात्मक कार्य कहीं भी आरम्भ किया जा सकता है। इसके लिए अध्यापन की व्यवस्था शिक्षितों के श्रमदान से हो सकती है। खेलकूद के लिए फुटवाल, वालीवाल, स्तर के उपकरणों का प्रवन्ध कर दिया जाय तो उतने भर से उसमें भाग लेने के लिए छोटे बड़ों का समुदाय एकत्रित होने लग सकता है। शिक्षा और स्वास्थ्य की सेवा साधना इन दिनों अपने देश की प्राथमिक आवश्यकता है। बाद में तो उसी शृङ्खला में सहकारी गृह उद्योगों को तथा श्रम दान के आधार पर बन पड़ने वाले अन्यान्य लोक मंगल प्रयोजनों को भी संचालित किया जा सकता है।

सृजन का एक पक्ष सेवा और दूसरा सुधार है। सुधार के लिए यों तो अनेकों कुरीतियां, मूढ़ मान्यताओं, अनाचारों से जूझना, जाँत-पाँत, ऊँच-नीच, पर्दा प्रथा, मृतक भोज, भिक्षा व्यवसाय जैसे अनेक कलंक और अभिशापों से पिण्ड छुड़ाना है। पर तात्कालिक और अत्यधिक कष्ट कारक कुप्रथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देहेज और धूमधाम वाली शादियों के प्रचलन को अविलम्ब रोकना है। खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं। इस तथ्य को जन जन के गले उतारा जाय। रोकने के लिए निंदा एवं भर्त्सना का वातावरण बनाया जाय। न्यूनतम इतना तो होना ही चाहिए कि मंडल के सदस्य अपने बच्चों के विवाह बिना दहेज और धूमधाम से करने का प्रण करें। साथ ही ऐसे किसी भी विवाह में सम्मिलित न हों जिसमें दहेज तथा धूमधाम की अवांछनीयता अपनाई गई हो। भले ही वे विवाह अपने कुटुम्बियों संबन्धियों के यहाँ ही क्यों न हों।

उपरोक्त सृजन प्रयोजनों को भी स्वाध्याय और सत्संग उपक्रम की तरह सभी प्रज्ञा सस्थानों को कार्यान्वित करनाहै। इसके लिए पाँच संचालकों की मण्डली पाँच-पाँच तक प्रकाश पहुँचाकर तीस विचारशीलों का परिवार तो गठित करे ही, पर साथ ही यह भी ध्यान रखें कि उसे इतने भर में सीमित नहीं करना है जिसका अधिक व्यापक बनाया जा सकना सभव हो उसके लिए निरन्तर प्रयत्नरत रहना है।

स्मरण रहे हर प्रज्ञा संस्थान का एक वार्षिकोत्सव प्रज्ञा आयोजन भी समारोह पूर्वक हर साल सम्पन्न करना है। जनजागरण और कार्यकर्ताओं को सक्रिय रखने में इन आयोजनों से असाधारण लाभ मिलता है। इसलिए स्थापनाके दिनसे वार्षिक प्रज्ञा आयोजन को बात ध्यानमें रखकर ही स्वाध्याय मडल और अपने बहुमुखी उत्तरदायित्व का परिपालन करते रह सकतें हैं।

क्र० १०८/८० युग निर्माण योजना,मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org